सृजन पथ पर नव्य युग की शक्ति का अवतार हो। श्रेष्ठ चिन्तन-मनन शुभ अवधारणा सुविचार हो।।
नवल गति, नव योजना नव सूत्र जीवन के मिलें, ज्ञान का विस्तार हो, अज्ञान का परिहार हो।।

सृजन पथ

परमेश्वरी देवी धानुका सरस्वती विद्या मन्दिर
सी. सै. स्कूल (आवासीय), वृन्दावन

वर्ष 4 अंक 1
15 मई 2024
विद्यालय गतिविधियों की त्रैमासिकी

श्याम प्रकाश पाण्डेय
प्रधानाचार्य

आचरण की शुद्धि मनुष्य को ऊँचा उठाती है और उसकी मलिनता मनुष्य को पतनके गर्तमें डाल देती है। चाहे मनुष्य कितना भी विद्वान् या धनवान् हो, जब तक उसका आचरण श्रेष्ठ नहीं होगा, तब तक समाज में उसको आदर की दृष्टि से नहीं देखा जायगा, इसलिये समाज में सम्मान पाने के लिये मनुष्य सदाचारी बने, यह नितान्त आवश्यक है। हम लोग प्रतिदिन जो आचरण करते हैं उन्हें ही आचार कहा जाता है। अच्छे आचरण का नाम है सदाचार।

विद्यार्थी – जीवन एक ऐसा समय है जिसमें बालक में जैसी अच्छी या बुरी आदतें पड़ जाती हैं वे जीवनभर छूटती नहीं हैं, इसलिये इस अवस्था में विद्यार्थियों को अच्छी-अच्छी आदतें डालने का अभ्यास करना चाहिये। ये ही अच्छी आदतें आगे चलकर सदाचार का मुख्य अंग बन जाती हैं।

सदाचार के कतिपय सामान्य नियम यहाँ पर दिये जाते हैं जिनका पालन करना प्रत्येक विद्यार्थी के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

(1) विद्यार्थी को सदैव सत्य ही बोलना चाहिये और कभी किसी की वस्तु लेनी हो तो पूछ कर ही लेनी चाहिये तथा माँग कर ली हुई वस्तु को सुरक्षित निश्चित समय पर वापस लौटा देना चाहिये।

(2) विद्यार्थी को सदैव मधुर वाणी का प्रयोग करना और अपशब्दों के प्रयोग से बचे रहना चाहिये।

(3) विद्यार्थी को पच्चीस वर्षतककी अवस्थापर्यन्त अखण्ड ब्रह्मचर्यका पालन करना चाहिये क्योंकि स्वस्थ शरीर ही सब धर्मो का मूल कारण है, अतः इसको स्वस्थ रखने के लिये संयम- नियम का पालन करना तथा प्रत्येक निर्दोष उपाय का पालन करना प्रत्येक विद्यार्थी का परम धर्म है

(4) किसी प्राणी को सताना भी ब्रह्मचर्य को खण्डित करना है, अतः विद्यार्थी को सभी प्राणियों के प्रति दया और करुणा का भाव रखना चाहिये।

(5) सदैव अच्छे लड़कों की संगति करनी चाहिए और सदा अपने मन को शुद्ध रखने का प्रयत्न करना चाहिये। ब्रह्मचर्य का पालन करने के लिये भी चित्त का शुद्ध होना नितान्त आवश्यक है।

(6) शराब, मांसाहार, काफी, चाय और धूम्रपान विद्यार्थी के लिये त्याज्य हैं, अतः इनके प्रयोग के बजाय सदैव सात्विक आहार ग्रहण करना चाहिए।

(7) अश्लील पुस्तकें और अश्लील दृश्य विद्यार्थी को उसके लक्ष्य से भटका देते हैं अतः सदैव अच्छे दृश्यों का अवलोकन और सदसाहित्य का ही अध्ययन करना चाहिये।

(8) प्रत्येक स्वस्थ विद्यार्थी को प्रतिदिन प्रातः चार बजे ब्रह्ममुहूर्त में उठना चाहिये। उठते ही माता-पिता को प्रणाम करना चाहिये।
तदनन्तर क्रमशः शौच, दन्तधावन, स्नान, संध्या, प्राणायाम और व्यायाम प्रतिदिन नियम से करने चाहिये।
अपने निवास स्थान, वस्त्र और शरीर के अङ्ग-प्रत्यङ्गों को स्वच्छ रखना चाहिये।

(9) नित्य कार्यों से निवृत्त हो हलका जलपान कर विद्यार्थी अपने स्वाध्याय में लग जाय। पूर्वदिन पढ़े हुए पाठ को विद्यालय जानेसे पूर्व सर्वदा याद कर लेना चाहिये ।
विद्यालय प्रतिदिन नियत समय पर पहुँचना चाहिये और वहाँ पहुँचकर सर्वप्रथम अध्यापकोंको प्रणाम करना चाहिये।
जो विद्यार्थी प्रतिदिन गुरुजनों को प्रणाम करता है। उसकी आयु, विद्या, यश तथा बल-बुद्धि बढ़ते हैं ।

(10) कक्षा में नियत स्थान पर बैठकर अध्यापक जो पाठ पढ़ायें उसे श्रद्धा तथा ध्यानसे सुने। गुरु के प्रति अपने हृदय में सदैव आदर भाव रखें और मन, वचन और शरीर से सदा उनका सम्मान तथा हित करनेकी चेष्टा करे।

(11) सदा उनका कृतज्ञ रहे तथा विनीत भाव से उनकी आज्ञा को स्वीकार करे। अपने सहपाठियों के साथ भी मित्रता का व्यवहार करना चाहिये।

(12) किसी से कभी भी लड़ाई-झगड़ा नहीं करना चाहिये। कभी किसी को तंग नहीं करना चाहिये। किसी भी साथी पर विपत्ति पड़ने पर उसकी तन, मन, धनसे सहायता करनी चाहिये।

(13) सभी के साथ शिष्टता का व्यवहार करना चाहिये। सभी स्त्रियों को माता और बहन के समान समझना चाहिये तथा माता और बहनों पर कोई अत्याचार हो रहा हो तो साहसपूर्वक उससे उनको मुक्त करना चाहिये।

(14) हाथ, मुँह और पैर धोकर आसन पर बैठकर निश्चिन्त तथा प्रसन्नचित्त होकर भोजन करना चाहिये। इस प्रकार जो भोजन किया जाता है उसका अच्छी प्रकार रस बनता है। यथासम्भव भोजन के समय मौन रहने की भी आदत डालनी चाहिये।

(15) भोजन में उत्तेजक तथा चित्तको विकृत करने वाले पदार्थों के प्रयोग के स्थान पर भोजन सुपाच्य और हल्का होना चाहिये। भोजन के बाद कुछ समय विश्राम करना अत्यन्त जरूरी है।

(16) गुरुजनों से बातचीत करते समय ऐसे शब्दों का व्यवहार करना चाहिये जिससे उनका सम्मान प्रकट होता हो तथा अपनी नम्रता प्रकट होती हो। विद्यार्थी माता, पिता और गुरुजनों का सदैव सम्मान करे क्योंकि माता, पिता और गुरुजनों का मनुष्य पर जो ऋण है उसका चुकाना बिल्कुल असम्भव है। अतः इनको सेवा के द्वारा प्रसन्न रखने का प्रयत्न करना चाहिये।

(18) गुरुजनों में केवल गुणों का दर्शन करना चाहिए क्योंकि प्रत्येक मनुष्य में कोई न कोई दोष अवश्य रहता है, परंतु विद्यार्थी को केवल गुरुओं के गुणोंकी ओर ही ध्यान देना चाहिये

(19) सोते समय तथा उठते समय उस भगवान का स्मरण अवश्य करना चाहिये, जिसने पैदा किया है तथा सब साधन प्रदान किये हैं। सोते समय जो-जो अच्छे या बुरे काम किये हों उनका प्रतिदिन स्मरण करना चाहिये और धीरे-धीरे बुराइयों को छोड़ने का अभ्यास करना चाहिये।

चाणक्य नीति

विषादप्यमृतं ग्राह्यममेध्यादपि काञ्चनम्। नीचादप्युत्तमां विद्यांस्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि।।

हमेशा अच्छे ज्ञान व अच्छी वस्तु की ओर आकर्षित होना चाहिए। यदि सोना गंदगी में भी गिरा हो तो उसे उठा लेना चाहिए। साथ ही यदि कोई व्यक्ति निचले कुल में भी जन्मा है और आपको ज्ञान दे रहा है तो उससे ज्ञान ले लेना चाहिए क्योंकि ज्ञान ही हर स्थान पर काम में आता है।

मंगलमय होवे नववर्ष

मंगलमय होवे नववर्ष
विश्वसृजन का प्रथम दिवस है,
वासन्तिक नवरात्र स्ववश है ।
रामचरित हो निज आदर्श,
अद्भुत अनुपम अद्वितीय है,
पौराणिक पावन नववर्ष।
जीवन उपवनको महकाता,
देता पल पल नव उत्कर्ष।।
मंगलमय होवे नववर्ष ...
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा समन्वित,
ऋतु वसंत सौरभ परिसिंचित।
प्रीत ताप सम दे नव हर्ष।।
मंगलमय होवे नववर्ष ...
धरा पीत साड़ी सरसों सी,
कनक खेत शुचि उत्कर्षो सी।
इठलाकर करती करस्पर्श।।
मंगलमय होवे नववर्ष ...
मधुमय दिव्य मनोहर उत्सव,
दर्शन देते केशव माधव।
हो जाता साधक दुर्धर्ष।।
मंगलमय होवे नववर्ष ...
नवप्रभातकी उज्ज्वल किरणें,
अठखेली करती हैं हिरणे।
मिट जाता मन का संघर्ष।।
मंगलमय होवे नववर्ष ...
मित्र बढ़ें प्रतिरोधी कम हों,
'मैं' की जगह सदा ही 'हम' हों।
हृदय प्रेमका हो संस्पर्श।।
मंगलमय होवे नववर्ष ...

नशा मुक्ति – एक पहल

दिनांक 5 मई 2014 शनिवार को विद्यालय में मृत्युंजय नशा मुक्ति फाउंडेशन और पूर्व छात्र परिषद विद्या भारती जिला इकाई मथुरा के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने वाले भैया तनिष्क अग्रवाल एवं द्वितीय स्थान वाले भैया श्याम बिहारी खंडेलवाल को एक–एक रेंजर साइकिल दी गई और इसके अतिरिक्त 10 अन्य छात्रों को जिनमें भैया स्वास्तिक मिश्रा, भैया मोहित चौधरी, भैया कुशल ठाकुर, भैया विवेक सारस्वत, भैया सिद्धार्थ यादव, भैया अन्वेष सारस्वत, भैया प्रतीक अग्रवाल, भैया आशुतोष आचार्य भैया, वंश अग्रवाल ,भैया दर्शन चौधरी, भैया राघव शर्मा भैया यशवर्धन और भैया हरिओम कुमार को एक पानी का कैंपर स्मार्ट वॉच भी दी गई। कार्यक्रम के संयोजक और मृत्युंजय नशा मुक्ति फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पवन आचार्य ने कहा कि नशा मुक्ति फाउंडेशन ने मथुरा जिले में दो विद्यालयों का चयन किया जिनमें से एक परमेश्वरी देवी धानुका सरस्वती विद्या मंदिर और एक राल में स्थित श्री दयानंद उच्च माध्यमिक विद्यालय रहे। उन्होंने ने कहा कि इस कार्यक्रम को करने का उद्देश्य लोगों में नशा मुक्ति के प्रति जागरूकता पैदा करना और नशा विहीन समाज के विकास में अधिक से अधिक लोगों को जोड़ना है।

विद्यालय स्तर पर श्री देवेंद्र कुमार गौतम जी द्वारा इस कार्यक्रम को पूर्ण कराया गया। पूर्व छात्र परिषद के जिला संयोजक श्री पुंडरीकाक्ष डी पाठक ने कहा कि पूर्व छात्र परिषद समाज के ऐसे संस्थानों का चयन करके समय–समय पर बच्चों के हितों के लिए नए–नए कार्य करती रही है और इसीक्रम में यह कार्यक्रम भी आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री श्याम प्रकाश पांडे ने की और संचालन गणित के प्रवक्ता श्री राहुल शर्मा के द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में मृत्युंजय नशा मुक्ति फाउंडेशन की पूरी टीम और समस्त आचार्य उपस्थित रहे जिनमें प्रमुख रूप से श्री कौशल किशोर भट्ट, श्री मोहित कुमार गुप्ता, श्री मुकेश जी, श्री सतीश अग्रवाल आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

अपनी बात

एक दिन एक व्यक्ति लिओ टोल्सटॉय के पास आया। आते ही उसने बड़े ही नाटकीय अंदाज में टोल्सटॉय से कहा कि आपका एक खास मित्र आपके बारे में कुछ कह रहा था। उसने सोचा जिज्ञासावश टोल्सटॉय तुरंत कहेंगे कि कहो, परंतु ऐसा कहें तो वे टोल्सटॉय की ऊंचाई पर कैसे पहुंच सकते थे ? सो उन्होंने बड़े ही शांत भाव से उस व्यक्ति से पूछा– यदि तुम जो बात बताना चाह रहे हो वह मेरे कार्य हेतु जानना आवश्यक हो तो कहो। और यदि वह बात मुझे कोई अच्छी नई राह सुझाने वाली हो, तो तुरंत कहो। और यदि उससे किसी का हित सधता हो, तब तो जरा भी देरी मत करो। परंतु उपरोक्त तीनों में से एक भी बात उस ''बात'' से नहीं बनती, तो मुझे सुनने में कोई रस नहीं।

बिल्कुल ठीक कहा टोल्सटॉय ने, कोई भी बात जानने के यही तीन कारण हो सकते हैं। परंतु हम और आप किसी भी उद्देश्यहीन बात को लेकर जिज्ञासा जैसे हजार कारणों से बात जानने को उत्सुक हो जाते हैं। बस, वैचारिक चंचलता के दायरे के बाहर जाने के ऐसे ही प्रयासों का हर्जाना आपको रोज–ब–रोज भुगतना पड़ रहा है।क्या कभी हमने सोचा है कि क्यों लाखों में एक ऐसी सफलता पा लेता है कि वह और उसके कार्य हजारों वर्षों तक याद रखे जाते हैं ? तथा क्यों बाकियों को उनकी मृत्यु के चंद दिनों बाद ही उनके चाहनेवाले तक भुला देते हैं ? तो इसका सीधा कारण यह है कि मनुष्यजीवन समय व ऊर्जा का खेल है। समय तो सबके पास 80–100 वर्ष ही होता है, बस सफल प्रसिद्ध व ऐतिहासिक पुरुष समय व ऊर्जा का अपव्यय नहीं करते हैं... जबकि हम कभी समय व ऊर्जा का सदुपयोग नहीं करते हैं। हम जीवनपर्यंत बेकार की बातों व बेकार के कार्यों में लगे रहते हैं। समझदारों को इशारा काफी है। आइए, विचारों और सूचनाओं की सुनामी के बीच से उपयोगी अमृत बिंदुओं के चयन की कला विकसित करें और अपने समय को यादगार बनाएं। मई के तीसरे सप्ताह में दशम एवं द्वादश का परीक्षा परिणाम प्राप्त हुआ जिसमें विद्यालय के भैयाओं ने उल्लेखनीय सफलता अर्जित की। सभी सफल भैयाओं का विद्यालय परिवार हार्दिक अभिनन्दन करता है। जिस समय यह अंक आपके हाथों में होगा तब अवकाश प्रारंभ हो रहे हैं। प्रयास करें कि अवकाश के पश्चात जब आपका पुनः आगमन हो तो आपके पास कोई नया विचार, कोई नई उपलब्धि या कोई नया प्रश्न अवश्य हो जिसके आधार पर आप आगामी समय को सही दिशा में नियोजित कर सकें।

बहुत बहुत शुभ कामनाओं के साथ

कौशल किशोर भट्ट
कार्यकारी संपादक

तर्कशक्ति विकास

प्रश्न (1) फल : आम :: स्तनपायी : ?

(A) सांप (B) गौरेया (C) मछली (D) गाय

प्रश्न (2) नीचे दिए गए शब्दों को एक सार्थक क्रम में व्यवस्थित करें।

(1) डॉक्टर, (2) मरीज, (3) रोगानिदान, (4) बिल, (5) इलाज

(A) 2,1,3,5,4 (B) 1,2,3,4,5 (C) 3,2,1,5,4 (D) 4,1,3,2,5

प्रश्न (3) 5 : 124 :: 7 : ?

(A) 342 (B) 343 (C) 248 (D) 125

प्रश्न (4) यदि DA IF से सम्बंधित है, तो NK किससे सम्बंधित होगा।

(A) SP (B) PS (C) PR (D) SR

प्रश्न (5) बैडमिंटन : कोर्ट ::

(A) हॉकी : छड़ी (B) स्कैटिंग : रिंग (C) क्रिकेट : बल्ला (D) फुटबॉल : गोल

प्रश्न (6) पर्वत : पहाड़ :: नदी : ?

(A) नहर (B) समुद्र (C) ग्लेशियर (D) सड़क

प्रश्न (7) विद्यालय : अध्यापक :: फुटबॉल : ?

(A) खेल (B) गोल (C) कीपर (D) कोच

प्रश्न (8) यदि परसों सोमवार था, तो परसों कौन सा दिन होगा।

(A) रविवार (B) शुक्रवार (C) मंगलवार (D) इनमें से कोई नहीं

Class - XII (CBSE Results : 2023-24)

Subject	Total	Appeared	90+	75+	60+	60-	Max%	Toppers
Science	102	102	9	41	46	6	96.4	GAURAV AGRAWAL
Commerce	37	37	5	17	15	-	96.2	TANMAY ARORA
Arts	21	20	3	8	5	4	95.8	GOPAL PACHAURI
Total	160	159	17	66	66	10		

Science Stream (9)	
Name	%age
GAURAV AGRAWAL	96.40
GOVIND BHARDWAJ	94.80
DHRUV SHARMA	93.00
SAJAL BHARADWAJ	93.00
MADHAV AWASTHI	92.80
NISHANT CHHONKER	91.20
MANISH UPADHYAY	91.00
GHANSHYAM PARASHAR	90.80
AYUSH UPADHYAY	90.00

Commerce Stream (5)	
Name	%age
TANMAY ARORA	96.20
SATYAM SHARMA	95.60
RAGHAV GOYAL	95.20
MADHAV AGRAWAL	93.80
KARTIK AGRAWAL	92.60

Art Stream (3)	
Name	%age
GOPAL PACHAURI	95.80
DHANANJAY YADAV	92.40
ARPIT	91.60

96.4% Gaurav Agrawal Science

96.2% Tanmay Arora Commerce

95.8% Gopal Pachauri Art

श्रम की पूजा करने वाले आगे बढ़ते जाते हैं, जो मेहनत से कभी न डरते, मंजिल वो ही पाते हैं।।
श्रम से पर्वत शीश झुकाते, तूफाँ भी रुक जाते हैं, श्रम का धन ही सच्चा धन है, सभी यही सिखलाते हैं।।
कभी परिश्रम व्यर्थ न जाता, दुनिया में सम्मान दिलाता, जिन आँखों में सपने है, वे ही ऊँचा उड़ पाते हैं।।

Class - X (CBSE Results : 2023-24)

Total	90+	75+	60+	60-	45-	Max%
298	46	115	96	43	4	96.60

90%+ Students (40) :-

Name	%age
HARSHUL GUPTA	96.6
MRIDUL BHATIA	96.0
AALOK UPADHYAY	95.6
HARSH VARDHAN SINGH	95.4
AMAN KHANDELWAL	95.4
HARSHIT GUPTA	95.2
PRABHAT SINGH	95.2
GAURAV CHAUDHARY	95.2
PARTH BANSAL	94.6
ALOK KUMAR SAINI	94.4
ANKIT CHATURVEDI	94.4
YUVRAJ SINGH	94.2
YAJAT AGRAWAL	94.0
AARADHY	93.4
HARDIK SINGH	93.4
SHIVAM SINGH	93.4
DEV CHATURVEDI	93.2
ISHAN KAUSHIK	93.0
ADITYA SARSWAT	92.6
DEVKINANDAN CHAUDHARY	92.6

Name	%age
MANU RAJPUT	92.4
SACHIN GAUTAM	92.2
HARSHIT CHAUDHARY	92.2
SAMEER RANJAN SAHOO	92.0
ABHINAV MAHESHWARI	92.0
HARSHIT RAGHAV	92.0
HIMANSHU SARASWAT	91.8
OM	91.8
RUDRAKSH PACHAURI	91.8
SURYA PRATAP SINGH	91.4
ANUBHAV YADAV	91.4
GAGAN SINGH RAGHAV	91.2
ABHINAV KRISHNA MISHRA	91.0
SOMANSHU CHAUDHARY	91.0
YOGYA AGRAWAL	91.0
ANURAG PANDEY	90.6
SUKHSINDHU MISHRA	90.6
AMAN SAVITA	90.6
HARSH AGRAWAL	90.6
SHIVAM SOLANKI	90.4

96.6% Harshul Gupta

महान विचारकों से प्राप्त सबक :

1. अंधों के देश में एक आंख वाला राजा हो जाता है।
2. जीवन में आगे बढ़ना है, तो बदलाव और चुनौतियों का सामना जरूरी है।
3. कल गिर गए थे तो क्या हुआ, आज फिर से खड़े हो जाइए।
4. जिस रास्ते पर सबसे कम रुकावटें हों, वह असफल लोगों का रास्ता होता है।
5. दुःख हमें उदास या अपराध बोध कराने नहीं आता, बल्कि सचेत करने और बुद्धिमान बनाने के लिए आता है।
6. हालात से तालमेल बैठाओ या खत्म हो जाओ – हर युग में प्रकृति का यही नियम है।
7. आज जो समस्या है, आने वाले समय में मजाक से ज्यादा कुछ नहीं होगी।
8. चलते–चलते रास्ता भटकना निराशा जनक है, लेकिन लक्ष्य से भटकना तो अपराध है।
9. जब आप कुछ नया सीखते हैं, तो सबसे पहले लगता है जैसे आपने कुछ खो दिया हो। बाद में कुछ मिलने का पता चलता है।
10. आपके पास क्या है और आप उसका कैसे उपयोग करते हैं, यह महत्वपूर्ण है।

एच. जी. वेल्स

जन्म 21 सितंबर,1866, इंग्लैंड
मृत्यु 13 अगस्त, 1946, लंदन
एक अंग्रेजी उपन्यासकार, पत्रकार, समाजशास्त्री और इतिहासकार थे जिन्हें द टाइम मशीन और द वॉर जैसे विज्ञान कथा उपन्यासों के लिए जाना जाता है।

याद करो कुर्बानी

परमवीर चक्र विजेता सूबेदार जोगिन्दर सिंह

सूबेदार जोगिंदर सिंह शूर सैनी राजपूत – 26 सितंबर 1921 – अक्टूबर 1962

पिता : श्री शेर सिंह जी, माता : श्रीमती किशन कौरजी

ये सिख रेजिमेंट के एक भारतीय सैनिक थे। इन्हें 1962 के भारत–चीन युद्ध में असाधारण वीरता के लिए मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। श्री सिंह 1936 में ब्रिटिश भारतीय सेना में शामिल हुए और सिख रेजिमेंट की पहली बटालियन में कार्यरत रहे। 1962 के भारत–चीन युद्ध के दौरान वह नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी (नेफा/NEFA) में तान्पेंगला, बुमला मोर्चेपर एक टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने बहादुरी से अपनी टुकड़ी का नेतृत्व किया तथा जब तक वह घायल नहीं हुए, तब तक अपनी पोस्ट का बचाव किया।

सूबेदार जोगिंदर सिंह के लिए जंग कोई नई बात नहीं थी। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान बर्मा की तरफ से लड़ाई लड़ी। 1947–48 में भारत–पाकिस्तान युद्ध लड़ा। कई पाकिस्तानी फौजियों को मौत के घाट उतारा। कइयों को वापस उनके मुल्क खदेड़ दिया, लेकिन उनकी असली बहादुरी की कहानी पता चली 1962 में हुए भारत–चीन युद्ध के दौरान। 20 अक्टूबर 1962 को चीन की सेना ने एक साथ कई इलाकों पर हमला शुरू कर दिया। इससे नमखा चू सेक्टर समेत पूर्वी सीमा के कई सारे इलाके चीन के कब्जे में जा चुके थे। अब चीनियों का सबसे बड़ा लालच तवांग पर कब्जा करना था। चीन को पता नहीं था कि आगे की तरफ भारतीय सेना की पहली सिख बटालियन के जवान खड़े हैं। बुमला पास के पास सूबेदार जोगिंदर सिंह की टुकड़ी मौजूद थी, इसमें कुल 27 जवान थे। इनके पास गोला बारूद की भारी कमी थी पर हौसलों की नहीं। कुछ ही देर में इस फ्रंट पर लड़ाई शुरू हो गई। करीब 200 चीनी सैनिकों ने हमला किया। इस हमले में कई चीनी सैनिक मारे गए। कुछ घायल हो गए जितने चीनी सैनिक बचे वह भाग गए। भारतीय जवानों का जवाब इतना करारा था कि चीनी हमला नाकाम हो गया। 200 चीनी सैनिक दोबारा तैयार होकर हमला करने आए। इस हमले को भी भारतीय फौज ने नाकाम कर दिया। इसमें भारतीय सेना को भी नुकसान पहुँचा। इसी बीच सूबेदार जोगिंदर सिंह को मशीन गन की एक गोली जाँघ में लगी। वे एक बंकर में घुसे। पट्टी बाँधी, फिर लड़ने के लिए मैदान में उतर गए, अपने सैनिकों का हौसला बढ़ाते रहे। चीनियों का बुरा हाल कर दिया। तीसरा और आखिरी हमला भयावह था कुछ देर की शांति के बाद 200 सैनिकों की एक चीनी टुकड़ी फिर हमला करने आ गई। सूबेदार सिंह के घायल जवान इस टुकड़ी से टकरा गए। उस समय भारतीय जवानों के पास गोला बारूद लगभग खत्म हो चुका था। सूबेदार जोगिंदर सिंह भी घायल हो चुके थे। सूबेदार जोगिंदर सिंह ने बचे हुए सैनिकों को तैयार करके खंजर का उपयोग करने को कहा। राइफलों की नोक पर खंजर लगाए गए। 'जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल' का उद्घोष करते हुए चीनी सैनिकों पर हमला कर दिया। जब सूबेदार जोगिंदर सिंह के गनर शहीद हो गए, तब उन्होंने 2 इंच वाली मोर्टार खुद फायर करनी शुरु की। कई राउंड दुश्मन पर चलाए। कई चीनी सैनिकों को मौत की नींद सुला दिया। लेकिन बुरी तरह से घायल सूबेदार जोगिंदर सिंह को चीनियों ने युद्ध बंदी बना लिया। वहाँ से तीन भारतीय सैनिक बच निकले थे, जिन्होंने जाकर सूबेदार जोगिंदर सिंह की बहादुरी की कहानी लोगोंको बताई ।

पीपुल्स लिबरेशन आर्मी ने जब उन्हें बंदी बना लिया तो कुछ घंटे बाद ही वे शहीद हो गए। सर्वोच्च बलिदान देने, सैनिकों को युद्ध के दौरान प्रेरित करने और अंत तक लड़ने के लिए भारत सरकार ने उन्हें 1962 में परमवीर चक्र से सम्मानित किया। चीन ने उनकी अस्थियाँ उनकी बटालियन को दे दी थीं। जोगिंदर सिंह का जन्म 26 सितंबर 1921 पंजाब के छोटे से गाँव मेहकालन में हुआ था। आरंभिक शिक्षा गाँव में हुई। 10 वीं पास करके बाद सिख रेजीमेंट में शामिल हो गए थे। तब उनकी आयु मात्र 15 वर्ष थी। उनका सेना में जाने का सपना था, जो उन्होंने 28 सितम्बर 1936 को पूरा किया।

विद्यालय समाचार

सुप्रसिद्ध भागवतवक्ता एवं धर्माचार्य श्री अनिरुद्ध आचार्य जी का आगमन

परमेश्वरी देवी धानुका सरस्वती विद्या मंदिर में सुप्रसिद्ध भागवत प्रवक्ता एवं धर्माचार्य श्री अनिरुद्ध आचार्य जी का वंदना सत्र में उद्‌बोधन प्राप्त हुआ। कक्षा 9 से 12 तक के छात्रों के साथ संवाद किया एवं उन्हें शिक्षा के प्रकार बताते हुए सभी प्रकार की शिक्षा ग्रहण करने के लिए छात्रों को ज्ञान दिया। छात्रों को अपने माता-पिता के प्रति मान सम्मान एवं आदर करने के लिए कहा।

छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा चार प्रकार की होती है धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष परक, किंतु आज भौतिक वातावरण में अर्थ और काम प्रधान शिक्षा ही रह गई है और धर्म तथा मोक्ष को लोग भुला बैठे हैं। प्रत्येक विद्यार्थी का परम कर्तव्य है कि वह अपनी शिक्षा में धर्म और मोक्ष के चिंतन का भी समावेश करें। इसके लिए सर्व प्रथम वह अपने माता-पिता के परिश्रम का सम्मान करें और सदैव उनका अभिवादन तथा आदर करें क्योंकि माता-पिता के उपकार अनंत है। सात्विक जीवन जीने वाला और जीवन में सत्य और अहिंसा को स्थान देने वाला व्यक्तिकभी भी दुख प्राप्त नहीं करता क्योंकि वह किसी को दुख नहीं पहुंचाता। उन्होंने कहा कि हमें कोई कार्य ऐसा नहीं करना चाहिए जिससे किसी प्राणी को कष्ट हो क्योंकि यह संपूर्ण सृष्टि परमात्मा का निर्माण है और कहीं न कहीं हम सभी एक ही परम प्रकृति द्वारा संचालित होते हैं। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्याम प्रकाश पांडे उप प्रधानाचार्य ओम प्रकाश शर्मा एवं वरिष्ठ आचार्य राहुल शर्मा, ललित गौतम ने श्री राम मंदिर का प्रतीक चिह्न भेंट कर तथा पटुका ओढ़ा कर आचार्यजी का स्वागत किया। श्री अनिरुद्ध आचार्य जी ने रोचक प्रश्न उत्तर शैली में बालकों के अनेक प्रश्नों के उत्तर दिए और उनकी आध्यात्मिक तथा सामाजिक समस्याओं का समाधान किया विद्यालय के वंदना सत्र में समय-समय पर समाज के विशिष्ट जनों को आमंत्रित करके उनके प्रेरणादायक उद्‌बोधन का लाभ छात्रों को दिया जाता रहा है और विद्या भारती विद्यालयों की यह विशेषता है कि वह आज के भौतिकता पूर्ण वातावरण में अपने छात्रों को संस्कारक्षम वातावरण प्रदान कर रहे हैं और धानुका विद्यालय परिवार इसके लिए प्रतिबद्ध है।

अभिभावक गोष्ठी

दिनांक 24.04.2024। परमेश्वरी देवी धानुका सरस्वती विद्या मंदिर में कक्षा दशम और द्वादश के छात्रों के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए एक अभिभावक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें दशम व द्वादश कक्षाओं में आने पर छात्रों के समक्ष आने वाली चुनौतियां और उनका सामना करने के लिए छात्रों में तनाव रहित कार्य क्षमता और आत्मविश्वास की वृद्धि हेतु अपनाये जाने योग्य महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा हुई।

गोष्ठी को संबोधित करते हुए विद्या भारती अखिल भारतीस शिक्षा संस्थान के राष्ट्रीय मंत्री डॉ. कृष्णवीर सिंह ने कहा कि बोर्ड कक्षाओं में आने पर छात्रों के मन में उठने वाली चिंता मुख्य रूप से अपने प्रतिशत में वृद्धि, कई प्रवेश परीक्षाओं के कट-ऑफ, कठिनाई स्तर और प्रतिस्पर्धा के हर गुजरते साल के साथ कठिन होने को लेकर

है। छात्रों में परीक्षा का तनाव और चिंता एक सामान्य स्थिति है किंतु घबराहट वाली भावना इसे विकृत बना देती है। इस संबंध में अपने दीर्घ कालिक शिक्षण अनुभव के आधार पर डाक्टर कृष्णबीर सिंह ने शिक्षक व अभिभावकों के पारस्परिक बेहतर तालमेल द्वारा शैक्षणिक वातावरण तैयार करने, विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सहयोग करने, बच्चों की स्कूल में शत–प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करने, विद्यार्थियों के लर्निंग गैप को पाटने, व्यवसायिक कोर्स से बच्चों को जोड़ने आदि पर चर्चा की।

गोष्ठी का संचालन वरिष्ठ आचार्य राहुल शर्मा द्वारा और आचार्य परिचय ललित गौतम द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रधानाचार्य श्याम प्रकाश पांडे ने गोष्ठी की भूमिका रखते हुए छात्र विकास के प्रति विद्यालय की प्रतिबद्धता स्पष्ट की। धन्यवाद ज्ञापन आभास अग्रवाल द्वारा और स्वागत ओम प्रकाश शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता नीरज भारद्वाज द्वारा की गई।

एसजीएफआई में दिलाया स्वर्ण पदक

परमेश्वरी देवी धानुका सरस्वती विद्या मंदिर के छात्र अमित कुमार ने पटना में आयोजित स्टूडेंट गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एस.जी.एफ.आई.) की एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं में 400 मीटर बाधा दौड़ के अंतर्गत स्वर्ण पदक प्राप्त करके पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र में एक कीर्तिमान बनाया है। विद्यालय के खेल प्रमुख सत्येंद्र कुमार ने बताया कि यह पहला अवसर है जब विद्याभारती द्वारा संयोजित पश्चिमी उत्तर प्रदेश क्षेत्र से किसी खिलाड़ी छात्र ने एथलेटिक्स में एसजीएफआई का स्वर्ण पदक प्राप्त किया है। उन्होंने बताया कि इन खेलों में विभिन्न केंद्रीय विद्यालय इकाइयों के 1500 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। बिहार के खेल मंत्री श्री सुरेन्द्र मेहता की उपस्थिति में विद्यालय के छात्र द्वारा स्थापित इस कीर्तिमान से विद्यालय परिवार हर्षोल्लास से परिपूर्ण है। केंद्रीय विद्यालयों के विभिन्न संगठनों की खेल प्रतिभाओं को सामने लाने के लिए अखिल भारतीय स्तर पर एसजीएफआई द्वारा इस प्रतियोगिता का प्रतिवर्ष आयोजन किया जाता है। अनेक विद्यार्थियों ने एसजीएफआई में शानदार प्रदर्शन के बल पर अनेक राष्ट्रीय युवा अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देश का प्रतिनिधित्व भी किया है। भैया अमित कुमार का पटियाला स्पोर्ट्स एकेडमी में अग्रिम प्रतियोगिता के लिये चयन हुआ है।

छात्र की इस उपलब्धि पर विद्यालय प्रबंधन की ओर से प्रबंधक पद्मनाभ गोस्वामी, सह प्रबंधक शिवेंद्र गौतम एवं कोषाध्यक्ष अशोक अग्रवाल द्वारा छात्र के उज्ज्वल भविष्य की कामना की गई तथा प्रधानाचार्य श्याम प्रकाश पांडे, उप प्रधानाचार्य ओम प्रकाश शर्मा सहित संपूर्ण आचार्य परिवार ने बालक की इस उपलब्धि पर उसे शुभकामनाएं एवं आशीर्वाद प्रदान किया।

सूचना संरक्षण पर एक कार्यशाला

दिनांक 30.04.2024। परमेश्वरी देवी धानुका सरस्वती विद्या मंदिर, में वृन्दावन की एक सामाजिक संस्था प्रयास द्वारा सूचना संरक्षण पर एक कार्यशाला आयोजित की गयी।

जैसा कि विदित है, आज मोबाइल एक जरूरत की वस्तु बन चुका है पर हम अपनी दी या ली हुई इंफोर्मेशन को सुरक्षित नहीं कर पा रहे हैं। दिनोंदिन फ्रॉड, साइबर क्राइम होते रहते हैं और हम अंजान बने होते हैं!

इसी विषम विषय को ध्यान में रखते हुए, युवाओं को जागृत करने हेतु, विद्यालयों और कॉलेज में इस विषय के विशेषज्ञ और संस्था के वरिष्ठ

सदस्य श्री रिभु नाथ लवानिया और प्रयास संस्था के अध्यक्ष अभय वशिष्ठ लगातार प्रयास संस्था के माध्यम से विभिन्न स्कूल और कॉलेज में जागरूकता शिविर आयोजित कर रहे हैं। जिससे युवा जाग सकें। रिभु लवानिया जी ने सभी छात्रों को आज के समय मे मोबाइल फोन और उसके द्वारा की जारी ऑनलाइन सेवाओं के सावधानी पूर्वक उपयोग के बारे में बताया। अपनी किसी भी जानकारी को किसी से भी शेयर न करें। मोबाइल पर आने वाले विभिन्न मैसेज और उन आने वाली ओटीपी को शेयर न करें।

उसी श्रृखला में सर्वप्रथम प्रधानाचार्य श्री श्याम प्रकाश पांडेय ने अतिथियों का सम्मान किया! इसमें कक्षा 11 व 12 के लगभग 350 छात्रो ने सहभागिता की! न केवल छात्रों अपितु अध्यापकों ने भी इस विषय की जानकारी ली! कार्यक्रम के अंत में दोनों संस्थाओं ने एक दूसरे को उपहार स्वरूप स्मृति चिन्ह प्रदान किया।

कार्यक्रम का संचालन राहुल शर्मा ने किया। आज प्रयास संस्था के सदस्य प्रवीण वशिष्ठ, मोहित गुप्ता, उपप्रधानाचार्य ओमप्रकाश शर्मा, ललित गौतम, अतिन अग्रवाल, महावीर सिंह, निशांत झंडई, हरीश भारद्वाज आदि उपस्थित रहे।

ज्ञान रंजन

कागज पर लिखने की काली स्याही दो तरह की होती है- पक्की और कच्ची। पक्की स्याही से पुस्तकें लिखी जाती हैं और कच्ची स्याही से व्यापारी लोग लिखते हैं। पक्की स्याही बनाने के लिए पीपल की लाख को, जो अन्य वृक्षों की लाख से उत्तम समझी जाती है, पीसकर मिट्टी की हंडिया में रखे हुए जल में डालकर उसे आग पर चढ़ाते हैं। फिर उसमें सुहागा और लोध पीसकर डालते हैं। उबलते-उबलते जब लाख का रस पानी में यहां तक मिल जाता है कि कागज पर उससे गहरी लाल लकीर बनने लगती है तब उसे उतारकर छान लेते हैं। उसको अलता कहते हैं। फिर तिल के तेल के दीपक के कज्जल को महीन कपड़े की पोटली में रखकर अलते में उसे तब तक फिराते हैं जब तक कि उससे सुंदर काले अक्षर बनने न लग जाएं। फिर उसे दवात में भर लेते हैं। संभव है कि ताड़पत्र के पुस्तक भी पहले ऐसी ही स्याही से लिखे जाते हों।

कच्ची स्याही काजल, कत्था, वीजाबोर और गोंद को मिलाकर बनाई जाती है परंतु पन्ने पर जल गिरने से स्याही फैल जाती है और चौमासे में पन्ने परस्पर चिपक जाते हैं। इसलिए उसका उपयोग पुस्तक लिखने में नहीं किया जाता।

भूर्जपत्र (भोजपत्र) पर लिखने की स्याही बादाम के छिलकों के कोयलों को गोमूत्र में उबालकर बनाई जाती थी। भूर्जपत्र उष्ण हवा में जल्दी खराब हो जाते हैं, परंतु जल में पड़े रहने से वे बिल्कुल नहीं बिगड़ते इसलिए कश्मीर वाले जब मैले भूर्जपत्र के पुस्तकों को साफ करना चाहते हैं तब उनको जल में डाल देते हैं जिससे पत्रों एवं अक्षरों का मैल निकल जाता है और वे फिर स्वच्छ हो जाते हैं। न स्याही हल्की पड़ती है और फैलती है।

भूर्जपत्र पर लिखी हुई पुस्तकों में कहीं अक्षर आदि अस्पष्ट हों तो ऐसा करने से वे भी स्पष्ट दीखने लग जाते हैं। काली स्याही से लिखे हुए सबसे पुराने अक्षर ईसा पूर्व की तीसरी शताब्दी तक के मिले हैं। रंगीन स्याहियों में लाल मुख्य स्याही है। यह दो तरह की होती है। एक तो अलता की और दूसरी हिंगुल की, जो उसको गोंद के पानी में घोलकर बनाई जाती है। हस्तलिखित वेद की पुस्तकों में स्वरों के चिह्न और सब पुस्तकों के पन्नों पर दाहिनी और बाईं ओर के हाशिये की दो-दो खड़ी लकीरें अलता या हिंगुल से बनी हुई होती हैं। ज्योतिष लोग जन्मपत्र तथा वर्षफल के लम्बे-लम्बे खरड़ों में खड़े हाशिए, आड़ी लकीरें तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की कुंडलियां लाल स्याही से ही बनाते हैं।

सूखे हरे रंग को गोंद के पानी में घोलकर हरी, जंगाल में जंगाली और हरिताल से पीली स्याही भी लेखक लोग बनाते हैं। कभी-कभी पुस्तकों के अध्याय आदि समाप्ति के अंशों में वे इन रंगीन स्याहियों का उपयोग करते हैं और विशेषकर जैन पुस्तकों में उनसे लिखे हुए अक्षर मिलते हैं।

वार्षिक परीक्षाफल एवं पुरस्कार वितरण

दिनांक 30 मार्च 2024 को परमेश्वरी देवी धानुका सरस्वती विद्या मंदिर गौशाला नगर वृंदावन में वार्षिक परीक्षाफल और पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मथुरा वृंदावन नगर निगम के महापौर श्री विनोद अग्रवाल जी उपस्थित हुए साथ में भाजपा नगर अध्यक्ष श्री विनीत शर्मा, वृंदावन नगर के गणमान्य पार्षद श्री सुमित गौतम, श्री वैभव अग्रवाल, समाजसेवी विजय राघव तथा वृंदावन कोतवाली प्रभारी श्री आनंद कुमार शाही जी और विद्यालय के कोषाध्यक्ष श्रीमान अशोक अग्रवाल जी ने कार्यक्रम में उपस्थित रहकर छात्रों एवं विद्यालय के आचार्यों का मनोबल बढ़ाया विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान श्याम प्रकाश पांडे जी ने विद्यालय के परीक्षाफल का एक सूक्ष्म वृत्त प्रस्तुत किया जिसके अनुसार छात्रों को शैक्षिक पुरस्कारों के साथ साथ खेलकूद, संस्कृति ज्ञान परीक्षा, शत-प्रतिशत उपस्थिति, गणित प्रदर्शनी, ओलम्पियाड, वार्षिकोत्सव, इंग्लिश स्पीकिंग, राइटिंग, रीडिंग, वी.वी.एम., वैदिक गणित मेला आदि विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में श्री विनोद अग्रवाल जी ने बच्चों को अच्छे अंक लाकर पुरस्कार प्राप्त करने के लिए हृदय की गहराइयों से बधाई दी और उन्हें आगे बढ़ने के लिये प्रेरित किया। विद्यालय के आचार्यो को इस प्रकार के होनहार और उत्कृष्ट बच्चों को विकसित करने के लिए आभार प्रकट किया उन्होंने कहा यही बच्चे भविष्य में अपने देश का अपने समाज का और अपने प्रदेश का प्रतिनिधित्व करने वाले हैं और भारत का मान बढ़ाने वाले हैं।

वार्ड नंबर 70 के पार्षद श्री वैभव अग्रवाल ने कहा कि वे भी इसी परमेश्वरी देवी धानुका सरस्वती विद्या मंदिर के पूर्व छात्र हैं और विद्यालय के अनुशासन ने ही उनको इस योग्य बनाया है कि वह आज समाज सेवा कर पा रहे हैं । उन्होंने विद्यालय के प्रधानाचार्य आचार्य और विद्यालय के सभी छात्रों को परीक्षा परिणाम के लिए अभिवादन किया। विद्यालय प्रबंध समिति एवं आचार्य परिवार की ओर से सभी छात्रो को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाये ।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता (क्र.-4)

1. ब्लू ओरिजिन के आगामी NS-25 मिशन के तहत किस भारतीय पायलट को अंतरिक्ष पर्यटक के रूप में 6 क्रू सदस्यों में शामिल किया गया है ?
2. भारतीय थल सेना ने स्वदेशी रूप से विकसित 'मैन-पोर्टेबल एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल' (MPATGM) हथियार प्रणाली का सफलतापूर्वक फील्ड परीक्षण कहां किया ?
3. उज्बेकिस्तान की फरीदा सोलियेवा के डोप टेस्ट में विफल होने के बाद अब किस भारतीय एथलीट के 2023 एशियाई चैंपियनशिप की 400 मीटर स्पर्धा में प्राप्त कांस्य पदक को रजत पदक में अपग्रेड किया जाएगा ?
4. हल्के लड़ाकू विमान (LCA) तेजस मार्क-1ए ने 28 मार्च, 2024 को कहां से अपनी पहली उड़ान सफलतापूर्वक पूरी की ?
5. 10 अप्रैल, 2024 को भारत का कौन सा बैंक लक्षद्वीप के कावारत्ती द्वीप में अपना पहला शाखा कार्यालय खोलकर इस क्षेत्र में शाखा स्थापित करने वाला एकमात्र निजी क्षेत्र का बैंक बन गया है ?
6. मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ के नेतृत्व में सुप्रीम कोर्ट ने किस पक्षी के समक्ष गंभीर खतरे से निपटने के लिये एक विशेषज्ञ समिति नियुक्त की है ?
7. चंद्रयान-3 के सॉफ्ट लैंडिंग स्थल 'शिव शक्ति' को हाल ही में किस अंतरराष्ट्रीय संस्था द्वारा मान्यता दी गई ?
8. भारत ने किस देश को अगले 5 वर्षों में 10 हजार करोड़ रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान करने की घोषणा की ?
9. विश्व के पहले ओम (ॐ) आकार के मंदिर का उद्घाटन कहां किया गया ?
10. भारतीय नौसेना ने वर्ष 2024 को किस वर्ष के रूप में घोषित किया है ?

पिछले अंक के उत्तर – 1. राजकुमार राव, 2. 21 अक्टूबर, 2023, 3. होप इनिशिएटिव 4 लॉस एंजिल्स ओलंपिक गेम्स 2028, 5. सूर्य किरण- XVII, 6. निडिराना वंश (genus Nidirana) 7. अर्जेंटीना, 8. अंतिम पंघाल, 9. संत तिरुवल्लुवर, 10. तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा

विशेष – इस प्रतियोगिता में सभी भैयाओं से उत्साहपूर्वक भाग लेने की अपेक्षा की जाती है। इन अंकों को सहेज कर रखें। सत्रांत में इनके आधार पर एक प्रश्नमंच प्रतियोगिता आयोजित की जायेगी। जिसमें प्रथम दस विजेता छात्रों को पुरस्कृत किया जायेगा।

सही उत्तर देने वाले छात्र

तनिष्क रावत – 7 बी

गीता संदेश

4. न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मत्।
कार्यते ह्यशः कर्म सर्व प्रकृतिजैर्गुणैः।।

अर्थ- कोई भी मनुष्य क्षण भर भी कर्म किए बिना नहीं रह सकता। सभी प्राणी प्रकृति के अधीन हैं और प्रकृति अपने अनुसार हर प्राणी से कर्म करवाती है और उसके परिणाम भी देती है।

व्यक्ति के जीवन में महत्त्व- बुरे परिणामों के डर से अगर ये सोच लें कि हम कुछ नहीं करेंगे तो ये हमारी मूर्खता है। खाली बैठे रहना भी एक तरह का कर्म ही है, जिसका परिणाम हमारी आर्थिक हानि, अपयश और समय की हानि के रूप में मिलता है। सारे जीव प्रकृति यानी परमात्मा के अधीन हैं, वो हमसे अपने अनुसार कर्म करवा ही लेगी और उसका परिणाम भी मिलेगा ही। इसलिए कभी भी कर्म के प्रति उदासीन नहीं होना चाहिए, अपनी क्षमता और विवेक के आधार पर हमें निरंतर कर्म करते रहना चाहिए।

Mittal # 9927136600

संरक्षक : श्री पद्मनाभ गोस्वामी
कार्यकारी सम्पादक : कौशल किशोर भट्ट
प्रधान सम्पादक : श्री श्याम प्रकाश पाण्डेय, प्रधानाचार्य
संयोजन समिति : मोहित गुप्ता, शैलेन्द्र गोयल
website : www.pddsvm.org || E-mail : pdd_svidyamandir@yahoo.com